“वर्ष 2012 में आगरा कैसा होगा—मेरा सपना और कैसे होगा वह साकार”

प्रस्तावनाः—

“मुग़लों की धरती पर हाय लग गयी किसको नज़र।
क्या यही है ताजमहल के होने का असर।।
द्वेष, ईर्ष्या और साम्प्रदायिकता फैल गयी इधर।
हे प्रभु, मुश्किल है यहाँ मनुष्य की डगर।।”

यह पंक्तियाँ शायद साधारण प्रतीत हों पर एक गूढ़ अर्थ की ओर संकेत करती हैं। आगरा भारतवर्ष का एक ऐसा हिस्सा है जिसकी संस्कृति और इतिहास को दुनिया में एक अलग पहचान मिली है। आर्यों की धरती, मुग़लों की राजधानी और न जाने कितने ही नामों से प्रसिद्ध आगरा में दुनिया भर से कितने ही सैलानी प्रतिदिन आते हैं, पर आश्चर्य की बात है यहाँ से जाने के बाद उनके मन में एक अजीब सी टीस रह जाती है। वह टीस क्या है जो इन सैलानियों में आगरा के प्रति विश्वास को कम कर देती है? इस प्रश्न का उत्तर शायद हम आगरावासियों की जुबान पर कभी नहीं आ पायेगा। इस सवाल का हल हमारे पास है तो सही पर हम उन्हें कहने से डरते हैं। आज से 20-25 वर्ष पहले हम गर्व से कहते थे कि हम आगरा निवासी हैं, हम ताजनगरी के निवासी हैं, हम वहाँ के निवासी हैं जहाँ लोगों की जुबान पेठे की मिठास से भरी है। पर समय के साथ यह वाक्य धूमिल होते जा रहे हैं। हम प्रतिदिन अख़बार पढ़ते हैं, हर रोज दूसरे पृष्ठ पर एक ही तरह की ख़बरों से हमारा सामना होता है, जो हैं—*‘आगरा की गन्दगी’, ‘आगरा का सर्वनाश’, ‘आगरा में साम्प्रदायिकता’* आदि। मैं इन खबरों को पढ़ते-पढ़ते ऊब चुका हूँ और अब मेरा एक ही स्वप्न है कि मैं 2012 तक आगरा में फैली इन बुराईयों को नष्ट कर दूँ और उसे एक खुशहाल और स्वच्छ शहर के रूप में विकसित करूँ।

मेरा सपना—आगरा एक समृद्ध और खुशहाल शहरः—

28 अगस्त, 2008 को मैं एक गोष्ठी में गया था, वहाँ हमें साफ-सफाई के कई उपाय बताये गये। उस रात स्वप्न में मैंने आगरा का स्वच्छ और समृद्ध चित्र देखा। उस दिन के बाद

मैंने यह ठान लिया कि मैं इस ताजनगरी में 2012 तक एक क्रान्ति लाने का प्रयत्न करूँगा जो इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगा।

"अंधेरों से ना घबराओ दोस्तों,
दीप में ज्योति जब तक बाकी है।
वह राह तुम्हें दिखलाएगा,
तुममे हिम्मत तब तक बाकी है।"

यह पंक्तियाँ ही मेरी शक्ति बनेंगी और मैं इनसे प्रेरणा लेकर ही अपने शहर को समृद्धशाली बनाऊँगा। मैं आगरा में सड़कों पर परिवहन का, नालियों में सफाई का, घरों में बिजली का, समुदायों में भाईचारे का, स्मारकों में सुंदरता का एक ऐसा चित्रण करूँगा जिससे आगरा में आने वाले सैलानी एक बार यहाँ आने के बाद बार-बार इधर की ओर अग्रसारित हों और आगरा का नाम विश्व भर में एक प्रतिष्ठित जगह के रूप में प्रसिद्ध हो।

आगरा में व्याप्त बुराईयाँ:—

आज मैं आगरा में कई बुराईयों को महसूस करता हूँ। जिनमें गन्दगी, प्रदूषण, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार प्रमुख हैं। अगर इन चारों पर नियन्त्रण कर लिया जाए तो आगरा के विकास को कोई रोक नहीं सकता।

"है कौन माई का लाल इधर।

जो रोक दे विकास को अगर।।

थम जाए गन्दगी, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार।

तो बन जाए मेरा आगरा स्वर्ग।।"

आगरा में व्याप्त विभिन्न बुराईयों के मूल स्थानः—

अगर इन बुराईयों के मूल स्थानों की चर्चा हो तो मैं आगरा को चार भागों में विभाजित करूँगाः—

पहला भाग मण्टोला, बिजलीघर क्षेत्र जो सांप्रदायिकता, भेदभाव तथा सांप्रदायिक दंगों में अव्वल है। यहाँ दो समुदाय हिन्दू और मुसलमान आये दिन दंगे-फ़साद कर शहर का माहौल ख़राब करते हैं। दूसरा स्थान नूरी दरवाजा, राजामण्डी, फव्वारा क्षेत्र तथा यमुना नदी है, जहाँ गन्दगी ने अपना साम्राज्य फैला रखा है। वहीं रामबाग से सिकन्दरा तक के व्यक्ति प्रदूषण की मार झेल रहे हैं, इनके अलावा हर बड़ा सरकारी कार्यालय भ्रष्टाचार की चपेट में है।

इनमें जहाँ बिजलीघर क्षेत्र का आगरा की अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा स्थान है, वहीं राजामण्डी क्षेत्र आगरा की धड़कन है। सिकन्दरा से रामबाग अहम् परिवहन क्षेत्र है तो वहीं सरकारी कार्यालय आगरा के मुख्य स्थानों में से एक हैं।

इन सभी जगहों में फैली बुराईयाँ आगरा के विकास में रोड़ा हैं। पर मैं इन जगहों पर वर्ष 2012 तक काफी सुधार की आशा करता हूँ क्योंकि मुझे यहाँ सुधार की किरण दिखाई देती है।

"इस आशा में जीता हूँ, होगा कभी सवेरा,
आने वाला कल का हो, वह सुन्दर दिन मेरा।
अम्बर के उस पार भेदता हो घोर अंधेरा,
इस पर भोर का फैले स्वर्णिम खूब उजेरा।
हट जायें दुःख में छाये नभ में काले बादल,
विहंस उठे भू पर फैला हरा भरा दुर्वादिल।
शीतल मन्द समीर बहे घर के भीतर-बाहर,
खुशियों से सहसा भर जाए मेरा अंतःकरण।"

आगरा का विकास और मेरे समाधानः—

मैंने इन समस्याओं को सुलझाने के लिए एक अलग और अनोखा उपाय निकाला है। जिसको मैं शब्दों में *"प्रोसैस ऑफ रीहैबिलिटेशन ऑफ आगरा-2012"* का नाम दूँगा। इस प्रोसैस के तहत आगरा के चारों हिस्सों के लिए चार टीमों का गठन किया जायेगा। जिसमें एक टीम स्कूली बच्चों की, एक टीम सामाजिक कार्यकर्ताओं की, एक टीम उन लोगों की जो अपने बताए हुए सिद्धांतों पर स्वयं चलकर दूसरों के लिए प्रेरणा बनते हैं तथा चौथी टीम उन लोगों की जो किसी भी सच्चाई को मनवाने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हों की होगी।

सबसे पहले बात गंदगी की—शहर की धड़कन माने जाने वाले राजामण्डी-नूरी दरवाजा क्षेत्र की गन्दगी आगरावासियों के ज़हन में हो। इससे निपटने के लिए स्कूली बच्चे सहायक हो सकते हैं।

कैसे ?

स्कूली छात्रों की एक ऐसी टीम गठित की जाए जो गन्दगी को शहर से हटाने के इच्छुक हों, फिर उन्हें उस क्षेत्र में लाया जाए। इसके उपरांत उन छात्रों को घर-घर भेजा जाए। जहाँ वे लोगों को सफाई के प्रति जागरुक करने के साथ-साथ उन्हें कूड़े के ढेर में फेंकी गयी वस्तुओं को दोबारा इस्तेमाल के बारे में बताएँ, वही दूसरी तरफ उन बच्चों से यमुना में सफाई करवाकर नगर निगम तथा सरकार को मीडिया द्वारा उनकी कमजोरियों से अवगत कराया जाए।

इसी कड़ी में सामाजिक कार्यकर्ताओं की टीम को "प्रोजैक्ट प्रदूषण" के तहत लोगों को प्रदूषण कम करने के उपायों से अवगत कराने के अलावा सरकार से ज्यादा प्रदूषण करने वाले वाहनों को हटाने की मांग की जाए। इसके अलावा प्रदूषण ज्यादा करने वाले वाहनों के स्वामियों पर 'कर' का व्यवधान भी रखा जाए।

"प्रदूषण ये प्रदूषण।
जान लेकर छोड़ेगा यह प्रदूषण
पेड़ कट गये सब,
तो ऑक्सीजन कम हो गयी अब,
धुंआ कम न हुआ अब,
तो मर जाएँगे हम सब,
ध्वनि का यह प्रदूषण,
कान फाड़कर छोड़ेगा अब,
हटाओ ये प्रदूषण और करो भू-रक्षण,
जान बचाओ प्यारे तुम सब, काम न आयेगा,
किसी के प्रदूषण ये प्रदूषण।"

अब बारी होगी 'सनकी' तथा कुछ कर दिखाने का दम रखने वाले व्यक्तियों को सरकारी कार्यालय भेजा जाए, जहाँ वे किसी भी तरह उन व्यक्तियों की बर्खास्तगी की मांग करे जो भ्रष्टाचारी हों या फिर घूस लेकर अपना घर चलाते हों। अगर वे ना मानें तो वे उन्हें ऊपर तक जाने की धमकी दें और तब भी ना मानें तो उन्हें ऊपर तक जाकर दिखाए जिससे उन्हें होश आए और वे ऐसे लोगों को बर्खास्त करें।

इसके बाद ऐसे व्यक्ति जो प्यार से लोगों को अनेक दायित्व समझा सकें तथा खुद भी उन्हीं सिद्धांतों पर चले, जिन सिद्धांतों की बात वे करते हैं को लेकर संवेदनशील जगहों पर पहुंचा जाए। वहाँ लोगों के घर जाकर उन्हें राष्ट्रीय एकता तथा भाईचारे का संदेश दें, ऐसे में वे लोग प्यार से मान सकते हैं। कहा भी जाता है– *जो बात अकड़ से नहीं बन सकती वो बात प्यार से बन जाती है।* अगर शुरू में उन लोगों द्वारा तिरस्कार भी किया जाए तो भी हार न मानते हुए हम बार-बार कोशिश करेंगे और बिना अपना सब्र खोकर उन्हें एकता के मार्ग पर लायेंगे। इसके बाद जब वे मान जाएँ तो उन्हें शपथ दिलाएँ कि वे कभी भी शहर का माहौल खराब नहीं करेंगे। इससे शहर में शान्ति बनी रहेगी।

उपसंहारः—

"मेरा साकार होगा सपना-आगरा एक विकसित शहर"

इस तरह मैं अपने सपने को साकार कर सकूँगा। मुझे यह पता है कि शुरूआत में मुझे कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है पर मैं बिना हार माने आगे बढ़ूँगा और आगरा को 2012 तक एक समृद्धशाली शहर के रूप में विकसित करूँगा। मुझे यकीन है कि इसमें मुझे अपने माता-पिता परिजनों, मित्रों और गुरूओं का भरपूर सहयोग मिलेगा।

—कमल चावला
कक्षा-12 (विज्ञान-अ)
होली पब्लिक स्कूल, सिकन्दरा, आगरा।

●

“वर्ष 2012 में आगरा कैसा होगा–मेरा सपना और कैसे होगा वह साकार”

आगरा एक ऐतिहासिक नगर है। मुग़लकाल में नगर का विकास चरम सीमा तक पहुँचा। उसी काल में मुग़ल बादशाह शाहजहाँ ने अपनी प्रिय बेगम की याद में ‘ताजमहल’ का निर्माण कराया जो आज संसार के सात अजूबों में एक है। ताज को देखने के लिए विश्व के कोने-कोने से बड़ी संख्या में लोग आते हैं। ताज के अतिरिक्त लालकिला, एत्माद्दौला, सिकन्दरा, फतेहपुर सीकरी उसी काल की अन्य मशहूर इमारतें हैं, जो यात्रियों के लिए आकर्षण बने हुए हैं। मुग़ल साम्राज्य के बाद आगरा के विभिन्न शासकों द्वारा देखरेख पर ध्यान लगभग न के बराबर रहा है। स्वतंत्रता के बाद ताजमहल के आकर्षण के कारण लाखों पर्यटकों का आना-जाना बना रहा है। इस कारण भारत सरकार द्वारा आगरा के विकास की ओर ध्यान तो दिया गया है परन्तु आवश्यकता से बहुत कम। यद्यपि आगरा को ‘वर्ल्ड सिटी’ के समकक्ष बनाने की घोषणा बार-बार होती है, परन्तु इस दिशा में जरा भी प्रगति नहीं दिखाई देती।

हम आगरा नगर के नागरिक हैं। हमारे परिवारीजन वर्षों से आगरा नगर में रहते आ रहे हैं। आगरा से हमारा एक गहरा लगाव है और चाहते हैं कि आगरा एक ‘वर्ल्डक्लास सिटी’ के रूप में हमारे सामने आए। अगले तीन वर्षों में अर्थात् 2012 तक आगरा एक उन्नत नगर रूप में विकसित हो, यह हमारा स्वप्न ही नहीं बल्कि तीव्र आकांक्षा है। पहली बात जो अतिशीघ्र होनी चाहिए वह कि आगरा प्रदूषण रहित नगर के रूप में विकसित हो। शुद्ध पेयजल, शुद्ध वायु, साफ-सुथरी सड़कें, जल व ड्रेनेज की सही व्यवस्था होनी चाहिए। आवागमन के सुलभ साधन तथा यातायात सुचारू होना चाहिए।

सड़कों को चौड़ा किया जाए तथा रखरखाव सुनिश्चित किया जाए। सड़कों के किनारे छायादार वृक्षों की कतारें तथा जगह-जगह सुन्दर फूलों से सजे चौराहे होने चाहिए।

पार्कों व अन्य खुले स्थानों को हरा-भरा बनाया जाए। बच्चों के आमोद-प्रमोद के लिए पार्कों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

सड़कों पर गायें, सूअर, भैंस आदि पशुओं व जानवरों को घूमते रहने से रोकना चाहिए।

आगरा आने वाले यात्रियों के लिए रुकने के स्वच्छ व सस्ते होटल आदि का प्रबंध बड़े पैमाने पर किया जाना चाहिए।

पीने के पानी की गुणवत्ता 'ए-क्लास' की होनी चाहिए।

यमुना नदी के किनारे पक्के बनाकर उन्हें स्वच्छ रखा जाना चाहिए। यमुना को स्वच्छ रखना हम सभी का परम कर्त्तव्य होना चाहिए। नगर में नागरिकों तथा पर्यटकों की सुरक्षा की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए।

हर नागरिक चाहे वह गरीब हो या अमीर सबको एक समान शिक्षा दी जानी चाहिए और उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए ताकि इस नगर का हर व्यक्ति पढ़ा-लिखा होना चाहिए।

सबको आपस में प्रेम से रहना व एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए।

किसी को भी नीचा समझकर उनका अपमान नहीं करना चाहिए। सबको एक बराबर दर्जा दिया जाना चाहिए।

पर्यावरण सुन्दर बनाए रखने के लिए हर घर के सदस्य को अपने घर के बाहर एक-एक पेड़ लगाकर उसकी देखरेख करनी चाहिए।

ट्रैफिक की अव्यवस्था को दूर करने के लिए फ्लाईओवर बनाने चाहिए।

आगरा के हर क्षेत्र में कचरा डालने का सही बन्दोबस्त होना चाहिए ताकि वहाँ का हर नागरिक एक ही जगह अपने घर का कचरा डाले और चारों ओर गंदगी न फैली रहे।

इसी प्रकार से आगरा को मैं अपने भविष्य में देखकर गर्व से कहना चाहूँगी कि *"मैं इसी सुन्दर आगरा की नागरिक हूँ।"* यही मेरा सपना है और इसे साकार करने के लिए मैं पूरा योगदान दूँगी।

– *वनालिका ढ़ाकरे*
कक्षा-10
प्रील्यूड पब्लिक स्कूल, आगरा।

●

“वर्ष 2012 में आगरा कैसा होगा आगरा

प्रस्तावनाः—

सुलहकुल, विरासतों की नगरी ‘आगरा’।

कृष्ण-राधा के युवा प्रेम की गवाह यमुना के किनारे बसा ‘आगरा’। जिसके नाम मात्र से शाहजहाँ के अगर प्रेम की निशानी ‘ताजमहल’ की याद आ जाया करती है, ऐसा शहर है ‘आगरा’।

अनेक विरासतों को अपने आंगन में समेटा आगरा भौगोलिक दृष्टि से उत्तर प्रदेश का उत्तर-पश्चिम में बसा एक सुन्दर व दर्शनीय नगर है परन्तु अभी आगरा को वो पहचान नहीं हासिल हुई है जिससे उसे विश्व के श्रेष्ठतम शहरों में गिना जा सके। हाँ, ये तो है कि यहाँ स्थित ‘ताजमहल’ विश्व के सात अजूबों में से पहले अजूबे में शुमार है पर आगरा को अभी विश्व के प्रथम सौ श्रेष्ठ शहरों में गिना जा सके। कारण कुछ नहीं बस यहाँ के व्यक्तियों का आलसीपन है। हमें इस आलसीपन को दूर कर आगरा को एक नए स्तर से पहचान दिलानी होगी “जिससे आगरा भारत से नहीं भारत आगरा से पहचाना जा सके।”

इसी संकल्प को दिल में रखते हुए मैं अपने कुछ विचार “सन् 2012 में आगरा कैसा हो” शीर्षक के प्रति व्यक्त कर रहा हूँ।

कुछ कड़वे सत्यः—किसी ने सत्य ही कहा है, सच हमेशा कड़वे होते हैं, मैं लिखने बैठा तो मुझे आगरा में व्याप्त बुराईयों का अंबार नज़र आया परन्तु हमें आगरा को श्रेष्ठ आदर्श शहरों की श्रेणी में लाना है तो इन सभी सचों को हिम्मत के साथ सामना करना होगा, जिससे कि हम सभी बुराईयों को दूर कर शहर के इस यशरूपी दीप को दोबारा उज्जवल कर सकें।

शहर में व्याप्त बुराईयाँ व उनका निदानः—

विद्युत एवं जल की समस्याः विद्युत व जल की समस्या शहर में वर्षों से है परन्तु इसे दूर करने का कोई प्रयास नहीं करता। आगरा जो कि एक पर्यटन शहर है, जिसके लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा

24 घण्टे विद्युत आपूर्ति देना अनिवार्य है परन्तु विद्युत विभाग द्वारा सुप्रीम कोर्ट की अवहेलना करते हुए विद्युत सप्लाई को दिन में कई बार काटा जाता है। पानी के लिए भी लोगों को समस्याओं से रूबरू होना पड़ता है। यमुना के किनारे होने के कारण भी कई जगह पानी खरीदना पड़ता है। यमुना वर्तमान में नदी कम नाला ज्यादा प्रतीत होती है। इसके पानी से भी अब लोग परहेज करने लगे हैं। विद्युत व जल की समस्याओं को जल्द से जल्द दूर करने के लिए संबंधित विभगों को नई लाभकारी योजनाओं को क्रियान्वित करना होगा।

सड़कों की समस्याः—शहर की सड़कों का हाल भी इस समय खस्ता है, जगह-जगह गड्ढ़ों की पर्याय बन चुकी आगरा की सड़कें प्रतिदिन दुर्घटनाओं को आमंत्रण देती हैं। अनेक विदेशी पर्यटक भी इनके कारण दुर्घटनाओं का शिकार होते हैं, इससे भी शहर की छवि पर धब्बा लगता है। शहर की सड़कों को लन्दन, वॉशिंगटन जैसा बनाने के लिए हमें प्रशासन को जगाना पड़ेगा।

गन्दगी का अंबारः—शहर में जिधर देखो उधर कूड़े के ढ़ेर मिल जाते हैं, जिनसे आती दुर्गंध से लोग इस तरफ से निकलना भी पसन्द नहीं करते। शहर के कचरे को बाहर न फेंककर शहर में ही डाल दिया जा रहा है, जिससे लोग अनेकों बीमारियों का शिकार हो काल के ग्रास में समा जाते हैं। हमें शहर में से गंदगी के अंबार को हटा अपने शहर को साफ-सुथरा रखना होगा व वृक्षारोपण कर शहर का वातावरण स्वच्छ रखना होगा।

CLEANAGRA GREENAGRA

साम्प्रदायिकताः—शहर इस समय जातिवाद के इस बारूदी सुरंग पर बैठा है जो कभी भी फटकर विशाल विनाशकारी रूप ले सकती है। शहर में आये दिन दंगे-फसाद होते रहते हैं। छोटी-छोटी झड़पें बड़ा रूप धारण कर शहर को हमेशा प्रचण्ड अग्नि से झुलसाती रहती है। हमें इस जातिवाद का खात्मा जल्द करना होगा, जिससे शहर में अमन-चैन कायम हो सके व सभी मिलजुल कर प्रेम से शहर की, देश की प्रगति में अपना अमूल्य योगदान दें।

इन सभी बुराईयों के अलावा शहर छोटी-छोटी जैसे—चोरी, अनीति, भ्रष्टाचारी, जुआखोरी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है जो शहर की साख पर बट्टा लगाती है। हमें इन समस्याओं से स्थूल रूप से निपटना होगा अगर हमें शहर की भलाई चाहिए तो।

मेरा शहर मेरे सपने—वर्ष 2012 में मेरा आगरा:—अगर हमने इन बुराईयों को समय रहते रोक लिया तो हमारे शहर आगरा को सर्वश्रेष्ठ शहर बनने से कोई नहीं रोक सकता क्योंकि आगरा पर विरासतों का अमर आशीर्वाद है जो इसके साथ हमेशा रहेगा। बुराईयों के समाप्त होने के बाद मेरा शहर कुछ इस प्रकार से दैदीप्यमान होगा।

विश्वमंगलकरणीय भारतीय संस्कृति का प्रचारक:—मेरे शहर 'मेरे सपनों का शहर' 2012 में पुन: भारतीय संस्कृति का उद्घोष करते हुए "वसुधैव कुटुम्बकम्" के नारे को बुलंद करेगा। भारतीय संस्कृति का शहर हमेशा प्रचार-प्रसार करेगा जो शहर उत्तर भारत की संस्कृति को अपने अन्दर समेटा है, इसका वह प्रचार-प्रसार करते हुए खुद को व भारत को नई पहचान हासिल करवाएगा। शहर की पावन भूमि से प्रत्येक व्यक्ति मानव-कल्याण की भावना व्यक्त करने वाली इन पंक्तियों को गा उठेगा—

"सर्वे भवन्तु सुखिन:, सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दु:ख भगभवेत्"

आर्थिक सुदृढ़ता:—मेरा विचार मेरा शहर आर्थिक रूप से सम्पन्न हो जाये। यहाँ पर कोई भूखा न रहे, प्रत्येक प्राणी के तन पर कपड़ा हो, रहने के लिए घर हो। गरीबी, बेरोजगारी और अशिक्षा का प्रभुत्व खत्म हो। प्रत्येक व्यक्ति अपने दम पर खड़ा हो शहर की प्रगति में भागीदार बनें, सभी शिक्षित हों, जिससे कि प्रत्येक दिशा में *"सुजलां सुफलां मलयज शीतलाम् शस्यश्यामला मातरम्"* का स्वर गूंज उठे।

—विपुल जैन
पुत्र श्री राजेश कुमार जैन,
32/41, पुराना कुतलूपुर, छीपीटोला, आगरा।
एम.डी. जैन इण्टर कॉलेज, आगरा।

●